वर्ष : २१ अङ्क : ५ अगस्त १९९७ ई०

जैन भवन

तित्थयर

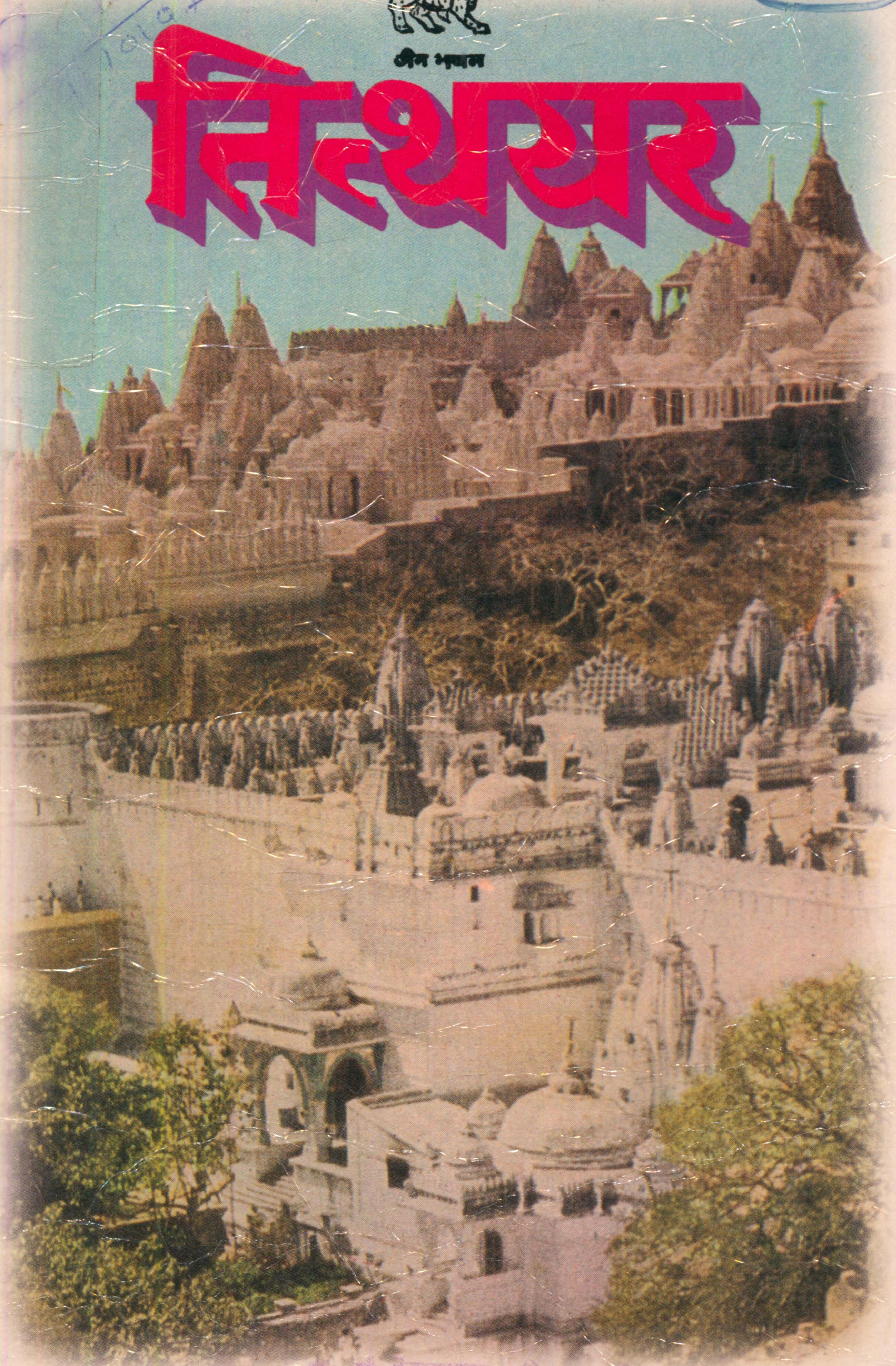

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञानमंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्र
वर्ष २१ : अंक ५
अगस्त १९९७

□

संपादन
राजकुमारी बेगानी
लता बोथरा

□

आजीवन : एक हजार रुपये
वार्षिक शुल्क : पचपन रुपये
प्रस्तुत अंक : पांच रुपये

□

प्रकाशक
जैन भवन
पी-२५, कलाकार स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०००७
दूरभाष : २३८२६५५

□

मुद्रक
अनुप्रिया प्रिन्टर्स
६ ए, बड़ौदा ठाकुर लेन,
कलकत्ता-७

सूची

शौरीपुर का राजकुमार	१२३
मूल्य एवं अनेकान्तिक दृष्टि	१३१
श्रावक जीवन	१३९
राजा सम्प्रति	१४२

OUR CUSTOMERS ARE OUR MASTERS

You can safely choose Oodlabari Tea for finest CTC teas, flavoury leaf teas and health giving Green Teas at reasonable prices. You can also phone at our Office for any assistance in selection of teas.

Insist on purchasing following packets :

Anyone desirous of taking dealership for our teas may kindly contact at following address :

THE OODLABARI COMPANY LIMITED
NILHAT HOUSE, 6TH FLOOR
11 R. N. MUKHERJEE ROAD, CALCUTTA 700 001

Calcutta office Phone : 248-1101, 248-9594, 248 9515

शौरीपुर का राजकुमार

पूर्णचन्द जैन

पूर्वानुवृत्ति

श्रीकृष्ण स्वयं आशंकित थे
यह नाद उठा था क्यों कैसे
पाञ्चजन्य कोई फूंक सके
यह संभव हुआ कहाँ कैसे ॥

आयुधशाला के प्रहरी ने
सन्देश तुरन्त ही भेज दिया
अन्य नहीं कोई था वहाँ पर
नेमीश्वर ने यह खेल किया ॥

आश्वस्त हुए सब नर-नारी
माधव को भी सन्तोष हुआ
नेमकुंवर की अतुल्य शक्ति देख
विस्मय का भी कुछ बोध हुआ ॥

राजनीति

राजनीति के प्रांगण में
स्वीकार नहीं होते रिश्ते
मरुधर की ऊसर भूमि में
फूल नहीं विकसित होते ॥

शंका मन में ये लिये हुये
माधव बैठे, फिर खड़े हुए
सत्यभामा ने भी यह देखा
वह किस सोच में लीन हुए ॥

माधव ने उनको बता दिया
भामा मन ही मन मुस्कायी
हरि को किया आश्वस्त उसी क्षण
दिखला कर अपनी चतुरायी ।।

हैं नेमिकुंवर तो महाबली
वह ब्रह्मचर्य के साधक हैं।
उर्ध्व गामिनी शक्ति पुंज के
वह तो सच्चे आराधक हैं ।।

तीर्थंकर वह हो सकते हैं
या चक्रवर्ती भी हो सकते
अतुल बली होना निश्चित है
कृतघ्न नहीं वे हो सकते ।।

इसी अवस्था में हरि तुमने
क्या-क्या ही कृत्य दिखाये थे
हनन पूतना, कंस किये थे
अरु नाग कालिया नथ लाये थे ।।

वृज भूमि पर पड़ी आपदा
गोवर्धन को था उठा लिया
शक्र इन्द्र को पराभूत कर
फिर धरती को था बचा लिया ।।

प्रखर ऊर्जा के धारक तुम
शैशव में ही यह रास रचे
यमुना के पावन तट पर
तुमने ही तो इतिहास रचे ।।

क्यों विस्मय में हो तुम माधव
यह सब भी तेरी लीला है
अम्बर और अवनि तल पर
तेरी ही शक्ति का खेला है।।

माधव तुम तो हो निर्णायक
अरु तीन लोक के हो ज्ञाता
स्वयं जानते कल क्या होगा
फिर यह कैसी है जिज्ञासा।।

तुम तो सदा अलिप्त रहे हो
पर कर्म औरों से करवाते
धर्म नियम का पालन होवे
इस सृष्टि को यूँ चलवाते।।

कुरुक्षेत्र के अमर समर में
यह तुमने ही तो कर दिखलाया
दे गीता का ज्ञान पार्थ को
फिर गाण्डीव था उठवाया।।

उस युग के वे महावीर भी
जब धर्म मार्ग से च्युत हुये
तेरी ही उस धर्म अग्नि में
आहुति बन कर के भस्म हुये।।

अपना विराट वह रूप सखे
रण में तुमने जो दिखलाया
उसमें सभी समाहित करके
फिर मोह भंग था करवाया।।

तुम कर्त्ता तो कहीं नहीं थे
फिर भी तो कर्म सभी तेरे
ज्ञान चक्षु से देखा जिसने
तुम ही तो थे कुशल चितेरे ।।

माधव तुम नारायण बनते
यह हमको तो स्वीकार नहीं
मानव जान तुम्हें पाया था
औरों को ये अधिकार नहीं ।।

भक्ति उपजती नारायण से
पर प्रेम उपजता मानव से
किस विधि करें समन्वय इनका
इस सागर से उस गागर से ।।

नारायण का रूप देखकर
सभी लोक मुस्काते हैं
तेरी भक्ति सुधा में पगकर
सभी दौड़ कर आते हैं ।।

तुम ऐसे निर्मोही हो जो
पल भर में हमें छोड़ देते
भक्त जनों की खातिर माधव
तुम किसी समय भी चल देते ।।

मेरे अधिकारों की सीमा
यूं लांघ सके कोई कैसे
यही डाह उठती है मन में
माधव तुम रहो सदा मेरे ।।

सगुण और निर्गुण का दर्शन
जब ब्रज भूमि में भेजा था
ऊधव ने जाकर वहाँ पर भी
यही तर्क तो बिखेरा था।।

युग-युग की प्यासी राधा ने
उसको था सहज नकार दिया
नारायण तुम को ना मान
नटवर का ही नाम दिया।।

वह तो जसुमति नन्दन जाने
कान्हा तुम्हें बुलाती थी
चोरी-चोरी माखन देकर
तुमको वह रोज रिझाती थी।।

नारायण वहाँ कोई नहीं था
पर रास रचाया नटवर ने
कालिन्दी की उन लहरों ने
था प्यार किया मुरलीधर से।।

यही वेदना हमें सालती
अब तो यह लीला शान्त करो
हम सबके ही साथ रहो प्रभु
अरु प्रणय व्यथा का भार सहो।।

पति का यह आदेश हमें अब
निश्चित करके दिखलाना है
नेमीश्वर को समझा करके
उनका संसार रचाना है

होली

मधुमय बसन्त की मन्द पवन
मलयागिरि से जब आ पहुँची
सुरभित आभा वाली कलियां
फिर खिली और मुस्करा उठी ।।

मधुमास तभी आगे आया
रंगों की सेज सजा डाली
जो पुष्प खिले थे उपवन में
उनकी भी हाट लगा डाली ।।

सागर भी था फिर शान्त हुआ
उन्मुक्त पवन के झोकों से
फागुन का पहला फाग खिला
सखियों की मधुर ठिठोली से ।।

वह पीत-पिताम्बर माधव का
आच्छादित चन्द्र किरण से था
चन्द्रानन सा उनका मुखड़ा
मिलता नील कमल से था ।।

हरित पीत शैया पर लेटे
वे स्वप्न लोक में विचर रहे
अरु देख रहे थे राधा को
कालिन्दी की अमराई तले ।।

चिर परिचित भोली राधा ने
लीना अबीर था हाथों में
आगे बढ़ कर हरिमुख पोता
स्वागत करती मुस्कानों से ।।

हरि की मुरली थी हाथ लगी
भौहों से वह मुस्काती थी
कंपित होठों से ना ना कर
फिर धीरे से छिप जाती थी

हरि ने मुरली फिर ली झपटी
अरु तुरन्त लगायी होठों से
स्वर लहरी फिर ऐसी उठी
ब्रज झूम गया उन गीतों से

हरि उठे उनींदी आँखों से
सत्यभामा ही तो खड़ी हुई
उसके सुन्दर परिधानों में
राधा ही सचमुच दीख रही ॥

फिर पीत झरोखे से देखा
सागर भी दीखा शान्त हुआ
लगता कालिन्दी आयी थी
अरु सागर में अवसान हुआ ॥

या लगता था ब्रज चल आया
द्वारा के फाग खिलाने को
या द्वारा स्वयं आ पहुँची
ब्रज के संग रास रचाने को ॥

यह स्वप्न लोक की पृष्ठ भूमि
भामा ने तुरन्त समझ लीनी
करके आमन्त्रित माधव को
फागों की याद दिला दीनी ॥

मंथन

अपने श्वेत कक्ष में बैठे
श्री नेमिकुंवर थे सोच रहे
धर्म और उसकी धारा के
हर कण-कण को तोल रहे ॥

परिवर्तन को स्वीकार किया
द्वारा का था निर्माण किया
इसमें क्या खोया क्या पाया था
फिर से अतीत का ध्यान किया ॥

सरल सौम्य जीवन खोया था
जो ब्रज में ही तो मिलता था
प्रकृति का माधुर्य जहाँ पर
पल-पल में खिलता था

मानव की अगणित इच्छायें
नगरों में उसको ले आती
स्वार्थ पंक में उसे फँसा कर
जीवन के मूल्य मिटा जाती ॥

नगरों का अभिशाप यही है
यहाँ जो सभ्यता बनती है
मानव मूल्य विहीन बना कर
मानवता को ही डसती हैं ॥

संस्कृति के आधार गांव हैं
उनका ही बस निर्माण करें
यह पलायन अर्थहीन है
हम यही तथ्य स्वीकार करें ॥

क्रमशः

मूल्य एवं अनेकान्तिक दृष्टि :
पाश्चात्य विचारकों के सन्दर्भ में

डॉ० विजय कुमार

किसी भी सत्ता में अस्तित्व-पक्ष और ज्ञान-पक्ष के अलावा एक महत्व-पक्ष भी होता है। 'मूल्य' शब्द इसी महत्व या गुरुत्व का प्रतिपादन करता है। हिन्दी भाषा में 'मूल्य' के लिए विभिन्न शब्दों के प्रयोग किये जाते हैं, जैसे—प्रतिमान, मानदण्ड, मानक आदि। मूल्य के विषय में सामान्यतया यह प्रश्न उठाया जाता है कि मूल्य क्या है? इस सन्दर्भ में किसी भी विचारकों में मतैक्य नहीं रहा है। मिसाल के तौर पर, सुखवादी कहते हैं कि जो सुखद है वही मूल्य है, विकासवादी कहते हैं कि जो अधिक विकसित है वही मूल्य है, आत्मपूर्णतावादी आत्मोपलब्धि को ही मूल्य मानते हैं। लेकिन मूल्य चाहे जिस रूप में भी हो वस्तुत: वह मानव मूल्य ही है। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि मानव-मूल्य से हमारा अभिप्राय क्या है? क्या हमारा अभिप्राय मानव का मूल्य से है अथवा मानव के लिए मूल्य से है या फिर मानव द्वारा निर्मित मूल्य से है। यदि हम मानव मूल्य का अर्थ मानव का मूल्य से लेते हैं तो पुन: प्रश्न उपस्थित होता है कि मानव का मूल्यांकन कौन करता है? इतना तो स्पष्ट है कि मूल्यों का सम्बन्ध मानव से होता है, साथ ही यह भी उतना ही सत्य है कि मानव स्वयं अपना मूल्यांकन भी करता है। क्योंकि मूल्यांकन का सम्बन्ध मानव-बुद्धि से होता है। मानव-बुद्धि एवं मानव चिन्तन हर देश और काल की दृष्टि से अच्छा या बुरा हो सकता है, जैसे 'चोरी करना' हमारी भारतीय परम्परा में अशोभनीय आचरण माना जाता है जबकि स्पार्टा निवासी चोरी करना अपना धर्म समझते थे। क्योंकि व्यक्ति से लेकर विश्व तक मूल्य-बोध के कई पड़ाव दृष्टिगोचर होते हैं, जैसे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व। एक ही व्यक्ति का स्वयं के प्रति मूल्य कुछ और होगा तथा समाज, राष्ट्र तथा विश्व के प्रति उसका मूल्य कुछ और होगा। किन्तु सबकी जड़ में व्यक्ति का स्वयं के प्रति मूल्य ही निहित है। अत: सामान्य तौर पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति अपने अन्दर जिन गुणों को विकसित करता है, उन गुणों के अनुरूप उसकी जीवनचर्या रूपाहित होती है और जब ये ही गुण सर्वमान्य

होकर सभी सदस्यों या अन्य व्यक्तियों के द्वारा आचरणीय हो जाते हैं तब वही मूल्य बन जाते हैं, यद्यपि मूल्य को एक आर्थिक अवधारणा के रूप में स्वीकार किया जाता है, जैसे 'रोटी का मूल्य' या 'एक दिन की मजदूरी का मूल्य'। लेकिन ये मूल्य भी किसी हद तक मानवीय आवश्यकता की पूर्ति के रूप में मानव-मूल्य को ही समर्थित करते हैं।

'मूल्य' के विषय में दो अलग-अलग दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं—

१) यह वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार मूल्य एक सामान्य और अमूर्त्त गुण जो वस्तुओं में निहित रहता है।

२) यह वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार वस्तुओं पर मूल्य आरोपित किये जाते हैं, क्योंकि वस्तुयें अपने आप में मूल्यहीन होती हैं। तात्पर्य है वस्तुओं को 'मूल्य' होने का श्रेय प्राप्त कराया जाता है।

ऐसी स्थिति में मूल्यों का स्वरूप निर्धारित करना अत्यन्त ही दुष्कर कार्य है, क्योंकि उपर्युक्त दृष्टिकोणों से यह स्पष्ट है कि एक विचारधारा मूल्य को वस्तुनिष्ठ स्वीकार करती है तो दूसरी विचारधारा व्यक्तिनिष्ठ। मूल्यों की वस्तुनिष्ठता और आत्मनिष्ठता पर प्रकाश डालते हुए डब्ल्यू० टी० स्टेस महोदय ने कहा है—"किसी मूल्य को हम आत्मनिष्ठ कहेंगे, यदि उसकी सत्ता पूर्णतया अथवा अंशतः किन्हीं मानवीय इच्छाओं, संवेदनाओं, सम्मत्तियों अथवा दूसरी मनोदशाओं पर निर्भर करती है। एक वस्तुनिष्ठ मूल्य इसके विपरीत होगा। वह एक ऐसा मूल्य होगा जो मनुष्य की किसी इच्छा, संवेदना अथवा दूसरी मनोदशाओं पर निर्भर नहीं करता।[१] मूल्यों की व्यक्तिनिष्ठता और वस्तुनिष्ठता के मतवैभिन्न्य के कारण ही आज तक उसका स्वरूप अनिर्धारित सा रहा है। पाश्चात्य जगत में बहुत से ऐसे दार्शनिक हैं जिनमें किसी ने मूल्य को व्यक्तिनिष्ठ माना है तो किसी ने वस्तुनिष्ठ और किसी ने दोनों को स्वीकार कर लिया है। इस सन्दर्भ में हम कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों को प्रस्तुत करना चाहेंगे।

जार्ज एडवर्ड मूर, जो नीति-चिंतन-प्रणाली में एक विशेष स्थान रखते हैं, ने 'शुभ' को अपरिभाष्य मानकर 'मूल्य' को अपरिभाष्य प्रमाणित किया है। मूल्य, ठीक उसी प्रकार अपरिभाष्य है जिस प्रकार पीला रंग। पीला रंग एक ऐसा सहज प्रत्यय जिसे लाख प्रयत्न करने पर भी परिभाषित नहीं किया जा सकता है। क्या हम किसी प्रकार से वर्णन करके एक ऐसे व्यक्ति को 'पीला' रंग के विषय में ज्ञान करा सकते हैं जिसने पहले कभी पीला रंग देखा ही न हो। इसी प्रकार शुभ भी एक सहज प्रत्यय है और सहज प्रत्यय होने के नाते उसे परिभाषित नहीं किया जा सकता। फलतः मूर 'शुभ' या 'मूल्य' को अंतःप्रज्ञा का विषय मान लेतें हैं, जो अपरिवर्तनशील और निरपेक्ष है यानि जो विषय शुभ

है वह अनिवार्यतः और सभी परिस्थितियों में शुभ ही रहेगा। साथ ही मूर यह भी कह बैठते हैं कि मैं शुभ को अपरिभाष्य कह रहा हूं, शुभ वस्तु को नहीं तो यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि शुभ एक विशेषण के रूप में मानवी प्रत्यक्ष से स्वतंत्र एवं वस्तुनिष्ठ भी है।[२]

आर० बी० पेरी के अनुसार 'अभिरुचि' ही मूल्य है। किसी भी विषय में कैसी भी अभिरुचि ली जाती है वह मूल्य का रूप धारण कर लेती है। यह ठीक उसी प्रकार होता है जिस प्रकार हम तीर साधते हैं और वह निशाने का रूप ले लेती है। पेरी के अनुसार मूल्य हमारे ज्ञान पर निर्भर न होकर हमारी अभिरुचियों पर निर्भर होते हैं। अभिरुचियों में परिवर्तन, मूल्यों में परिवर्तन है, अभिरुचियों में विस्तार मूल्यों में विस्तार है। तात्पर्य है जैसी जिस विषय में अभिरुचि होती है, वैसा ही उस विषय का मूल्य होता है।[३] पेरी के इन विचारों से साफ जाहिर होता है कि वे मूल्य की व्यक्तिनिष्ठता का समर्थन करते हैं लेकिन उन्हें पूर्णतः व्यक्तिनिष्ठवादी कहना उनके ऊपर अपने विचारों को थोपना है। क्योंकि पेरी मूल्य को अभिरुचि पर आधारित मानते हुए यह भी स्वीकार करते हैं कि वस्तु स्वयं अभिरुचि का अनुकूल विषय होता है। इस प्रकार वे 'मूल्य' की वस्तुनिष्ठता को किसी न किसी रूप में स्वीकार कर लेते हैं।

जॉन ड्यूवी, जो मूल्य सम्बन्धी विषयनिष्ठ सापेक्षतावादी सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं, के अनुसार 'मूल्य' शाश्वत और निरपेक्ष न होकर परिस्थिति सापेक्ष होते हैं। जैसी हमारी परिस्थिति और आवश्यकता होती है, वैसा ही हम मूल्यों का निर्धारण कर लेते हैं। मूल्य हमें बने बनाये प्राप्त नहीं होते। यदि कोई यह कहे कि एक बढ़ई किसी कुर्सी की रचना एक ऐसे आदर्श कुर्सी को अपने समक्ष रखकर करता है जो देश-काल से पूर्णतः निरपेक्ष हो, मात्र कोरी कल्पना है। जबकि वास्तविकता यह होती है कि बढ़ई अपनी आवश्यकताओं और अवस्थाओं के अनुरूप कुर्सी का एक आदर्श बनाता है और उसी के अनुरूप उसे वास्तविकता प्रदान करता है। यदि निर्माण के पश्चात् निर्मित कुर्सी उन अवस्थाओ और आवश्यकताओं की पूर्ति करता है जिन आवश्यकताओं और अवस्थाओं की प्राकल्पना उसने की थी तो वह प्राकल्पना मूल्यवान हो जाती है। तात्पर्य है हर मूल्य परिस्थिति-सापेक्ष होता है: एक ही वस्तु में परिस्थिति के अनुकूल मूल्य परिवर्तित हो जाते हैं। मिसाल के तौर पर, हम दूध को ले सकते हैं। दूध के सम्बन्ध में यदि कोई प्रश्न करता है कि क्या दूध अच्छा होता है तो इसका कोई सुनिश्चित उत्तर दे पाना कठिन है। क्योंकि दूध अपने-आप में न तो अच्छा होता है और न ही बुरा बल्कि एक व्यक्ति के स्वास्थ्य के संदर्भ में अच्छा हो सकता है तो दूसरे व्यक्ति के संदर्भ में बुरा।[४] इस तरह की बातें

अपने आप में विरोधात्मक प्रतीत होती है किन्तु दोनों ही सही हैं तथा सापेक्ष और विषयनिष्ठ हैं। क्योंकि दोनों ही कथन भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के सन्दर्भ में कहे गये हैं। जैसा कि ड्यूवी महोदय ने कहा है—कोई भी वस्तु चाहे वह साधारण टेबुल, कुर्सी, पुस्तक या ऐसे कोई भी स्थूल पदार्थ हों, छोटे या विराट रूप में सभी केवल अर्थपूर्ण घटनाएं (events) हैं। अर्थात वे कुछ विशेष गुण या धर्मों के संग्रह हैं और व्यक्ति वास्तव में उन्हें इन्हीं धर्मों के रूप में जानता है।[५] ड्यूवी का यह मत जैन दर्शन के सत् उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है[६] अर्थात् विभिन्न गुणों का संग्रह होने के फलस्वरूप वह मात्र स्थायी द्रव्य नहीं हो सकता।

ज्यां पॉल सार्त्र, जो अस्तित्ववादी विचारक हैं, के अनुसार मूल्य, व्यक्तिगत, परिवर्तनीय तथा स्वतंत्र रूप से वरण किये हुए हैं। **मूल्यों का अपना कोई सिद्धान्त नहीं होता। वस्तुओं का मूल्य हमारे मूल्यांकन पर निर्भर करता है और वह मूल्यांकन**, मूल्यांकनकर्त्ता का व्यक्तिगत मूल्यांकन होता है। कोई भी व्यक्ति हमें किसी बात को अधिक या कम मूल्यांकन करने के लिए बाध्य नहीं कर सकता क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्वतंत्र मूल्यांकन होता है और उसी मूल्यांकन के आधार पर वह अपनी भविष्य की योजनाएँ बनाता है।[७] मिसाल के तौर पर "मै अनपढ़ हूं" को मैं मूल्यांकित कर अशुभ घोषित नहीं करता तथा उसे दूर करने के लिए भविष्य की योजनाएँ नहीं बनाता। इस प्रकार सार्त्र ने मूल्य को पूर्णत: व्यक्तिनिष्ठ माना है।

मूल्य-सम्बन्धी कुछ पाश्चात्य विचारकों के मतों को जानने के बाद यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या सभी कथन या कार्य व्यक्तिनिष्ठ रूप में 'मूल्य' कहला सकते हैं? इस सम्बन्ध में जे० एस० मेकेन्जी का कहना है कि किसी भी बात या कार्य को उचित या मूल्यवान समझने का यह मतलब नहीं है कि हम केवल अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से ही न विचार करें बल्कि ऐसे दृष्टिकोण से विचार करें जो कम से कम सार्वभौम होने का प्रयत्न तो करता ही हो।[८] इसी प्रकार यह भी प्रश्न उठता है कि क्या सभी कार्य वस्तुनिष्ठ दृष्टि से उचित या मूल्यवान कहला सकते हैं? इस सम्बन्ध में हर्बर्ट स्पेन्सर ने कहा है कि शायद ही कभी हम इस सम्बन्ध में निश्चित हो सकें कि कोई कार्य वस्तुनिष्ठ दृष्टि से उचित या मूल्यवान है ही क्योंकि हमेशा इस बात की आशंका बनी रहेगी कि उस कार्य के कुछ ऐसे परिणाम सामने न आ जाए जो शुभ न हो।[९] अत: हर कार्य वस्तुनिष्ठ दृष्टि से उचित या मूल्यवान नहीं कहला सकता है। जॉन ड्यूवी के इस कथन से यह मान्यता और पुष्ट होती है कि **हर तथ्य मूल्य हो यह आवश्यक नहीं है लेकिन हर मूल्य तथ्य-सापेक्ष होते हैं।**[१०]

अब हमारे सामने समस्या आती है कि व्यक्तिनिष्ठता और वस्तुनिष्ठता की उपर्युक्त समस्या का आखिर हल क्या है ? क्योंकि विवेकी मनुष्यों को यह विश्वास दिलाना एक दुष्कर कार्य ही नहीं बल्कि असंभव सा प्रतीत होता है कि वस्तुगत दृष्टि से समस्त कलाकृतियाँ समान रूप से अच्छी या बुरी हैं। समाधान का एक दृष्टिकोण यह भी हो सकता है कि 'मूल्य' के क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक दूसरे व्यक्ति का दृष्टिकोण अपना ले। लेकिन यह भी असंभव है। यदि ऐसा होता तो फिर विभिन्न लोगों के बीच मतभेद की गुंजाइश ही नहीं होती। प्रसिद्ध संदेहवादी दार्शनिक पिर्हो के एक शिष्य ने कहा है—"यदि सारी चीजें हम सबके द्वारा एक ही तरह देखी जाती होती तो हम सबके वही आवेग होते, वही इच्छायें होती, जो कि होती नहीं है।[११] व्यक्तिनिष्ठता और वस्तुनिष्ठता का यह भेद मात्र दृष्टि-भेद है। वस्तुतः दोनों परस्पर सापेक्ष हैं। डॉ० सागरमल जैन ने अपने शोध निबन्ध में कहा है कि "मूल्य न तो पूर्णतया वस्तुतंत्र है और न पूर्णतया आत्मतन्त्र ही। हमारा मूल्यबोध आत्म और वस्तु दोनों से प्रभावित होता है। सौन्दर्य बोध में, काव्य के रस-बोध में आत्मनिष्ठता और वस्तुनिष्ठता के इन दोनों पक्षों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मूल्य अपनी मूल्यवत्ता के लिए चेतन सत्ता की अपेक्षा करते हैं तो दूसरी ओर चेतन-सत्ता मूल्य-बोध के लिये किसी वस्तु, कृति या घटना की अपेक्षा करता हैं। मूल्य न तो वस्तुओं से प्रकट होते हैं और न मात्र आत्मा से।[१२]

मूल्यांकन सम्बन्धी मतभेदों में एक मतभेद यह भी है कि मूल्य को साध्य माना जाय या साधन। इस सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि मूल्य न तो पूर्णतः साध्य है और न पूर्णतः साधन, क्योंकि विभिन्न संदर्भों में एक ही मूल्य साध्यात्मक और साधनात्मक दोनों हो सकते हैं। मिसाल के तौर पर स्वास्थ्य को हम साध्यात्मक मूल्य ही कह सकते हैं और साधनात्मक मूल्य भी। साध्यात्मक और साधनात्मक मूल्यों की चर्चा अरबन ने भी अपनी मूल्य सम्बन्धी विवेचना में प्रस्तुत की है। उन्होंने मूल्य को जैविक और अतिजैविक रूप में विभाजित कर आर्थिक, शारीरिक और मनोविनोद को जैविक तथा सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्य को अतिजैविक मूल्य के अन्तर्गत रखा है। मूल्यों के इस विभाजन के अन्तर्गत आर्थिक मूल्य को शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों को अर्जित करने के साधन के रूप में स्वीकार करते हुए उन्होने कहा है कि आर्थिक मूल्य मौलिक रूप से साधन मूल्य है, साध्य मूल्य नहीं।[१३] हमारी भारतीय परम्परा में भी पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के अन्तर्गत अर्थ को एकमात्र साधन मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है क्योंकि वह काम की संतुष्टि में सहायक होता है। यहाँ यह प्रश्न उठता

है कि क्या वास्तव में अर्थ का अपना कोई मूल्य नहीं होता ? उत्तर स्वरूप यह कहा जा सकता है कि अर्थ प्रयोजन की दृष्टि से मूल्यवान होने के साथ-साथ स्वयं में भी मूल्यवान होता है। यदि यह स्वयं में मूल्यवान नहीं होता तो हमारी लाख कोशिशों के बावजूद भी वह हमारे प्रयोजनों की पूर्ति नहीं कर सकता था। क्या हम एक सादे कागज के टुकड़े से अपने शारीरिक, सामाजिक या विनिमय रूपी प्रयोजनों को पूरा कर सकते हैं ? नहीं। तो फिर यह कहना कि अर्थ का अपना कोई स्वतः मूल्य नहीं होता, उचित नहीं जान पड़ता है।

मूल्य के विषय में एक मतभेद इस बात को लेकर भी है कि वस्तु में स्वतः मूल्य नहीं होता बल्कि उसमें आरोपण कराया जाता है। यदि यह सत्य तो फिर हमें पानी पीने के लिये लोटे या गिलास की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि हम किसी अन्य वस्तु में लोटे या गिलास के गुणों का आरोपण करके पानी पी लेते। अतः यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य होता है।

उपर्युक्त चर्चा के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ऐसा कोई भी मूल्य नहीं है जो पूर्णतः वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिनिष्ठ हो या पूर्णतः साध्य या साधन मूल्य हो। वस्तुतः मूल्य एक सर्वसमावेशी गुण सम्पन्न तत्व है जो हमारी अपेक्षा दृष्टि से भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देता है। जो लोग मूल्य को निरपेक्ष एवं सर्वोच्च मानते हुए यह कहते हैं कि मूल्य अपरिभाष्य है तो प्रश्न होता है कि क्या निरपेक्षता की स्थिति में हम मूल्यों को जान सकते हैं ? नहीं। क्योंकि सौंदर्य, जो एक अमूर्त प्रत्यय है, का बोध जब भी हमें होगा किसी न किसी पुष्प या चित्रों के माध्यम से ही होगा। यदि हम मूल्यों को निरपेक्ष मानते भी हैं तो कुछ ऐसे प्रश्न उभर कर सामने आते हैं जो मूल्यों की सापेक्षता की ओर इङ्गित करते हैं, जैसे—

- यदि मूल्य निरपेक्ष है तो क्या निरपेक्ष मूल्यों को मानदण्ड मानकर अपने वर्तमान अनुभव से प्राप्त तथ्यों की तुलना कर सकते हैं।
- यदि मूल्य निरपेक्ष है तो हमें ज्ञान नहीं हो सकता और यदि उसका ज्ञान होता है तो वह निरपेक्ष नहीं रहता।
- यदि वह निरपेक्ष है तो उसे निरपेक्ष प्रमाणित होने के लिए किसी की अपेक्षा होगी।

जहाँ तक मूल्यों की सर्वोच्चता की बात है तो जिसे हम सर्वोच्च मूल्य मानते हैं, तो वह भी सर्वोच्च है निम्न की अपेक्षा से ही। यदि दस तक की संख्या हो और हम यह कहें कि दसवां सर्वोच्च है तो वह भी नौ की अपेक्षा से ही सर्वोच्च होगा।

अतः कहा जा सकता है कि मूल्य निरपेक्ष नहीं बल्कि सापेक्ष है। मूल्य एक नहीं बल्कि अनेक है। एक ही वस्तु में अनेक मूल्य होते हैं, जैसे—एक गिलास जिसमें उत्पादन की दृष्टि से आर्थिक मूल्य है तो पानी पीने की दृष्टि से उपयोगी रूपी मूल्य है तथा कला की दृष्टि से सौन्दर्यात्मक मूल्य है। इस प्रकार मूल्य एक अनैकान्तिक दृष्टि है। जैसाकि डॉ० सागरमल जैन ने मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा है—मूल्य एक अनैकान्तिक व्यापक और बहुआयामी प्रत्यय है, वह एक व्यवस्था है, एक संस्थान है, उसमें भौतिक और आध्यात्मिक, श्रेय और प्रेय, वांछित और वांछनीय, उच्च और निम्न, वासना और विवेकी सभी समन्वित है।[१४] मिसाल के तौर पर एक तारा की आकृति को हम तारा भी कह सकते हैं, उसे दो त्रिभुजों को एक दूसरे को काटते हुए भी कह सकते हैं या उसे षट्कोण भी कह सकते हैं। इसी प्रकार मूल्य भी एक बहुआयामी तत्व है जिसे साध्य मूल्य भी कह सकते हैं और साधन मूल्य भी, स्वतः मूल्य भी कह सकते हैं और परतः मूल्य भी कह सकते हैं, वस्तुनिष्ठ मूल्य भी कह सकते हैं और व्यक्तिनिष्ठ मूल्य भी। अतः मूल्य अनैकान्तिक दृष्टि है। ●

---

1. Any value will be called subjective if the existence of the value depends, wholly or in part, on any human desires, feelings, opinions, or other mental states. An objective value which does not depends on any human desire, feelings, or other mental states Religion and the Modern Mind, W. T. Stace Mac Millan, London, 1953, P. 26
2. **नीतिशास्त्र की समकालीन प्रवृत्तियाँ**, डॉ० सुरेन्द्र वर्मा, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ 100
3. वही पृ० 135
4. वही पृ० 157
5. There is no conceivable universe of discourse in which thing may not figure, having in each its own characteristic meaning. And if we say that after all it is 'paper' which all these different meanings, we are at bottom but asserting that......paper is its ordinary meaning for human inter-course. **Experience and Nature,** open court, Chicago, 1929, P. 320

6. उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् **तत्वार्थसूत्र**, पं० सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ शोधपीठ ग्रन्थमाला—22, 1993, अ० 5 श्लोक 9।

तथा देखें—The notion of being involves a permanent (dhruva) accession of some new qualities (utpada) and loss of some old qualities (Vyaya)........**Indian Philosophy,** S. N. Dasgupta, Cambridge University Press, 1963, P. 175

7. **नीतिशास्त्र की समकालीन प्रवृत्तियां**, डॉ० सुरेन्द्र वर्मा, म० प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ० 218।

8. **नीति प्रवेशिका**, जे० एस० मेकेञ्जी, अनु० डॉ० गोवर्द्धन भट्ट, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि० दिल्ली, 1964, पृ० 200

9. वही

10. **नीतिशास्त्र की समकालीन प्रवृत्तियाँ**, डॉ० सुरेन्द्र वर्मा, म० प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ० 153

11. If all things were perceived by us in the same way, we should all have the same impressions, the same ideas, the same emotions, the same desires : which is not the case. **History of Philosophy, Weber & Perry,** Charles, Scribner's Sons, Newyork, 1925, P. 116

12. **मूल्य और मूल्यबोध की सापेक्षता का सिद्धान्त**, डा० सागरमल जैन, श्रमण अंक 1-3 (जनवरी-मार्च) 1992, पृ० 5।

13. **नीतिशास्त्र की भूमिका**, डॉ० हृदयनारायण मिश्र, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ़ 1976, पृ० 174

14. **मूल्य और मूल्यबोध की सापेक्षता का सिद्धान्त**, डॉ० सागरमल जैन, श्रमण अंक 1-3 (जनवरी-मार्च) 1992, पृ० 2।

□●□

श्रावक जीवन (११)

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी महाराज

पूर्वानुवृत्ति

तथा व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमम् ।

परम कृपानिधि महान् श्रुतधर आचार्यश्री हरिभद्रसूरीश्वरजी स्वरचित 'धर्मबिन्दु' ग्रन्थ में गृहस्थ का विशेष धर्म बताते हुए सावधान करते हैं—'जो व्रत ग्रहण करें, उसका निरतिचार पालन करने हेतु अतिचारों को समझें ।

यहाँ प्रस्तुत में ग्रंथकार ने अणुव्रतों के लिये तो 'व्रत' शब्द का ही प्रयोग किया है परन्तु गुणव्रत और शिक्षाव्रत के लिये 'शील' शब्द का प्रयोग किया है। यह विशिष्ट शब्दप्रयोग है। और कहीं पर भी गुणव्रत और शिक्षाव्रत के लिये 'शील' शब्द का प्रयोग प्रायः पढ़ने में नहीं आया है। 'शील' शब्द का अर्थ व्यापक रूप में किया गया है ।

दिशाओं का परिमाण, भोग-उपभोग परिमाण, अनर्थदंड, विरति जैसे शील-स्वरूप हैं वैसे सामायिक, देशावगासिक, पौषध और अतिथि-संविभाग भी शील स्वरूप हैं ।

प्रत्येक व्रत और प्रत्येक शील के पांच-पांच अतिचार हैं। पहले अणुव्रत के पांच अतिचार इस प्रकार बताये गये हैं—

बन्ध-वध-च्छविच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ।

अतिचार किसको लगते हैं ?

अतिचारों का विवेचन करने से पूर्व, ये अतिचार कैसे मनुष्य को लगते हैं, यह बात समझाता हूं ।

जो मनुष्य क्रोधी होता है, लोभी होता है, यानी कषायों से जिस का अन्तःकरण मलिन होता है और 'जीव मर जाय तो भी क्या ? इस प्रकार सोचता हुआ जीवहिंसा के प्रति निरपेक्ष वृत्तिवाला होता है, उसको जीवों का बंध···वध···वगैरह करने पर अतिचार लगते हैं। परन्तु जो मनुष्य जीवों का बंध···वध वगैरह करने में सापेक्ष वृत्तिवाला होता है, कषायों के परवश नहीं होता है, उसको अतिचार नहीं लगते हैं ।

सापेक्ष जीव बंध वगैरह करता है फिर भी निर्दोष होता है, जबकि निरपेक्ष जीव को बंध वगैरह करने पर अतिचार लगते हैं। इस प्रकार अतिचार का सम्बन्ध क्रिया के साथ नहीं बताया, भाव के साथ बताया गया है ।

१. जीवों का बंध :

जीवों के साथ आपका व्यवहार किस भाव से होता है, यह महत्वपूर्ण बात है। याद रखें की आप व्रतधारी बने हो, आपको 'प्राणातिपात विरमण' नाम का पहला अणुव्रत है। पशु हो या मनुष्य हो, निष्प्रयोजन आप उसको बांध नहीं सकते। बन्धन पशु को भी अच्छा नहीं लगता है, मनुष्य की तो बात ही क्या ? केवल अपने मनोरंजन के लिए अथवा परपीड़न के लिये आप पशु या मनुष्य को बांधे नहीं। कुछ लोगों को परपीड़न में मजा आता है। ऐसा मजा व्रतधारी नहीं ले सकता है।

प्रयोजन से भी पशु या मनुष्य को बांधना पड़े तो सापेक्षभाव से बांधना चाहिए, निरपेक्षभाव से नहीं।

कभी कोई चोर पकड़ा गया और उसको बांधना है, कभी कोई नौकर या नौकरानी ने बड़ा अपराध किया हो और उसको बांधना है, कभी लड़का पढ़ाई नहीं करता है और उसको बांध कर बिठाना है·····तो ऐसे बांधना चाहिये कि कभी उस जगह आग लग जाए तो वे स्वयं अपने बंधन खोल सकें। कभी सांप वगैरह आ जाय तो वे स्वयं अपनी रक्षा कर सकें ! निरपेक्षभाव से, कस कर नहीं बांधना चाहिये कि वे बेचारे हिल भी न सकें ! यानि निर्दय बनकर नहीं बांधने चाहिये।

वास्तव में तो श्रावक को अपने घर में ऐसे ही पशु रखने चाहिये कि जिन को बांधना नहीं पड़े ! बिना बांधे ही प्रेम से रहे ! वैसे नौकर वगैरह भी वैसे ही रखने चाहिये कि जिन को बाँधने की कभी नौबत ही नहीं आये ! फिर भी कभी बांधना पड़ जाय तो सापेक्षभाव से बांधना चाहिये, बिना क्रोध-लोभ किये बांधने चाहिये, ताकि अतिचार नहीं लगे।

अब आप लोग पशुपालन तो करते ही नहीं ! छोटे-छोटे शहरों में रहने-वाले नहीं रखते पशुओं को, और गाँव में रहने वाले जैन भी प्रायः पशुपालन नहीं करते। अपने जैन समाज में पशुपालन प्रायः रहा ही नहीं है। दूसरे ब्राह्मण वगैरह समाजों में भी पशुपालन कम होता जा रहा है।

पशुपालन नहीं करने से हिंसा बढ़ी है :

ज्यों-ज्यों पशुपालन कम होता गया है त्यों-त्यों 'स्लाटर हाउस' बढ़ते गये हैं और रोजाना लाखों पशुओं का कत्ल होता जा रहा है। आपलोग स्थिर बुद्धि से सोचेंगे तो समझ पायेंगे कि इतनी घोर हिंसा बढ़ने में आपलोग भी निमित्त बने हो।

इस घोर हिंसा को रोकना है तो पशुपालन व्यापक रूप से होना चाहिये। ग्राम्य विस्तारों में लाखों पशुओं का पालन हो सकता है। परन्तु पशुओं के प्रति

प्रेम और करुणा होनी चाहिये न ? वह कहां से लायेंगे ? मनुष्यों के प्रति भी प्रेम और करुणा के स्रोत सूखते जा रहे हैं…तो फिर पशुओं के प्रति प्रेम-करुणा की अपेक्षा कैसे रखी जाये ।

श्रावक के हृदय में पशुओं के प्रति भी ऐसा प्रेम हो कि उसके वहाँ रहे हुए पशु बिना बंधन रहें ! पशुओं को जहाँ प्रेम हो जाता है, वे बिना बंधन वहाँ रह जाते हैं। शास्त्रों में ऐसे उदाहरण भी आते हैं। श्रावक के वहाँ रहे हुए दो बैल, जिस दिन श्रावक-श्राविका उपवास करते, दो बैल भी उपवास करते थे। श्रावक-श्राविका जब स्वाध्याय करते थे, पास में खड़े-खड़े दो बैल भी स्वाध्याय (धर्मचर्चा) सुनते थे। सुनते सुनते वे सरल और दयावान प्राणी बन गये थे।

प्रश्न : आज तो हम उपवास करते हैं तो हमारे लड़के भी नहीं करते ! और हम धर्मचर्चा करते हैं तो हमारे बच्चे पसन्द नहीं करते।

महाराज श्री : हाथी, घोड़े, बैल, गाय, भैंस…वगैरह पशु प्रायः सरल परिणाम वाले पशु होते हैं। वे प्रेम का जवाब प्रेम से देते हैं। मनुष्य में सरलता नहीं रही ! प्रेम का जवाब तिरस्कार से मिलता है न ? करुणा का जवाब क्रूरता से मिलता है न ? उपकार का जवाब अपकार से मिलता है न…! इस अपेक्षा से, मनुष्य से पशु अच्छा प्राणी है !

२. जीवों को निरपेक्ष भाव से मारो नहीं :

जिस प्रकार मनुष्य और पशुओं को निरपेक्ष भाव से बांधना नहीं है वैसे उनको निरपेक्ष भाव से मारना भी नहीं है। यहां 'वध' शब्द का अर्थ 'मर्डर' हत्या नहीं करना है, परन्तु शारीरिक सामान्य सजा समझना है ! ऐसे मारना कि उसके मर्मस्थानों में प्रहार न हो जाय, चोट नहीं लगे।

वास्तविकता तो यह है कि श्रावक का व्यक्तित्व ही ऐसा हो कि घर के सभी लोग उसका विनयवाले बनें। यदि कोई अविनय, औद्धत्य करता हो, दो-तीन बार समझाने पर भी नहीं समझता हो….तो मामूली सजा करनी चाहिये। परन्तु सजा करते समय हृदय में क्रोध नहीं होना चाहिए। क्रोध होगा तो सापेक्ष भाव नहीं होगा। क्रोध में मनुष्य अन्धा हो जाता है मर्मस्थान में भी प्रहार कर देता है। सामनेवाला जीव मर्माहत होकर मर भी जाय ! बड़ा अनर्थ हो जाय। इसलिये, पशु या मनुष्य को मारते समय भी भीतर से जाग्रत रहना है। भाव सुधारने का रखना है, मारने का नहीं !

जीवों के अंगोपांग का छेदन नहीं करें :

निर्दयता से जीवों के साथ व्यवहार करने का ही नहीं है। जब निर्दयता से जीवों को मारने के नहीं, तो फिर उनके हाथ, पैर, कान, नाक वगैरह अंगोपांग का च्छेदन कैसे किया जाय ? श्रावक वैसा हीन कार्य कर ही नहीं सकता।

क्रमशः

राजा-सम्प्रति

आठवाँ परिच्छेद

पूर्वानुवृत्ति

चाहिए। क्योंकि रणभूमि पर जाना श्रेष्ठ है; जब कि लोगों में उपहास पात्र होकर जीना कदापि उचित नहीं कहा जा सकता। मुझे याद है कि बाल्यावस्था में जब मेरा जन्म हुआ, उस समय हमारे गुरु सामरसूरि नाम के प्रख्यात आचार्य को मेरी डाढ़ का वृत्तान्त सुनाकर मेरे पिता ने उसका फल पूछा। इस पर गुरु ने कहा था कि :—"तेरा पुत्र बड़ा ही बुद्धिमान् और बहुत बड़ा राजा होगा।"

किन्तु पिता ने राज्य को नरक-प्रदान करनेवाला समझकर मेरी डाढ़ों को पाँचीका-रेती से घिस दिया, और यह वृत्तान्त फिर जाकर अपने गुरु से निवेदन किया। इस पर गुरु ने पिता को उलाहना देते हुए कहा :—"हे भद्र! तुमने यह क्या किया? प्राणी जैसा कर्म करता है उसका फल तो उसे भोगना ही पड़ता है! तुमने बालक की डाढ़ों को घिस दिया है; फिर भी यह बालक समय आने पर किसी को आगे रखकर महान् राज्य का उपभोग अवश्य करेगा।" ये पूर्वकाल की सुनी हुई बातें आज याद आ रही हैं। अतएव अब तो मुझे प्रयत्न करना ही होगा। इसीलिए "देहं पातयामि वा कार्यं साधयामि"।

"बस, भले ही सूर्य कदाचित् पश्चिम में भी उदय हो जाय; या पृथ्वी भी उलट जाय; किन्तु मेरा वचन कदापि निष्फल नहीं हो सकता।" इस प्रकार विचार करते हुए चाणक्य ने परिव्राजक का वेष धारण कर जहाँ-तहाँ परिभ्रमण करना आरम्भ किया। क्रमशः वह नन्द राजा के मयूर पोषकों के ग्राम में जा पहुंचा। उस समय उनके नायक की पुत्री गर्भवती थी। उसे चन्द्र के पान करने का दोहद उत्पन्न हुआ; किन्तु उसकी अभिलाषा पूर्ण न हो सकने से वह मृत्युमुख की ओर जाने जैसी हो गयी थी।

नायक द्वारा चाणक्य को यह रहस्य ज्ञात होने पर उसके गर्भ से जन्म लेनेवाला बालक अपने को देने की प्रतिज्ञा पर उसने नायक की पुत्री की अभिलाषा बुद्धिपूर्वक पूर्ण कर दी।

वहाँ से चाणक्य धातुओं की खदानों के देश में गया और वहाँ धातुर्वादी लोगों से बहुत सा द्रव्य उपार्जन कर जब वापस लौटा, तब उसने एक बालक को राजा बनकर अन्य बालकों के साथ खेलते हुए देखा। उस स्वाभिमानी

तेजस्वी बालक की सुन्दरता और चतुराई देखकर चाणक्य बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसके पास जाकर नम्रतापूर्वक कहने लगा :—"देव ! मैं ब्राह्मण हूं; मुझे कुछ दीजिये ?"

यह सुनते ही तत्काल बालक ने कहा :—"हे ब्राह्मण ! यह गायों का समूह जो सामने चर रहा है; इसे तुम ले जाओ !"

"किन्तु इनका स्वामी मुझे मार नहीं डालेगा ?" चाणक्य ने पूछा।

"तुम नहीं जानते कि पृथ्वी तो तलवार के बलपर ही भोगी जा सकती है ?" बालक के इस वीरतापूर्ण वाक्य को सुनकर चाणक्य ने पता लगाया कि यह बालक किसका है ?

तब उसे मालुम हुआ कि यही बालक ग्राम के नायक की पुत्री का लड़का है; और इसका नाम चन्द्रगुप्त है। यह जब गर्भ में था, तभी से इसे एक परिव्राजक को अर्पण कर दिया गया है।" यह जानते ही चाणक्य को बड़ी प्रसन्नता हुई और वह बालक के पास आकर कहने लगा :—

"हे वत्स ! आओ, आओ ! यहाँ मेरे पास आओ ! तुम जिस परिव्राजक को अर्पण किये गये हो, वह मैं ही हूं। मेरे साथ चलो; मैं तुम्हें सच्चा राजा बना दूँगा। इस प्रकार खेल का राजा बनने से तुम्हें कैसे सन्तोष हो सकता है।" यों कह कर चाणक्य उस बालक चन्द्रगुप्त को वहाँ से ले गया और धातुर्वादियों से एकत्रित किये हुए द्रव्य से चतुरङ्गिनी सेना खड़ी करके चन्द्रगुप्त को उसका स्वामी राजा बना दिया तथा स्वयम् उसका महामन्त्री बन गया।

उस सेना के द्वारा उसने पाटलीपुत्र को घेर लिया। अतएव नन्दराजा को भी अपनी सेना सहित बाहर आना पड़ा और जब युद्ध में चन्द्रगुप्त की सेना छिन्न-भिन्न होकर पलायन कर गई; तो चाणक्य भी अपनी पराजय होती देख चन्द्रगुप्त को साथ लेकर चल दिया। नन्दराजा ने चाणक्य को पकड़ने के लिए इधर-उधर सैनिक दौड़ाये और उसे पकड़कर लाने के लिए इनाम भी घोषित किया।

इधर चन्द्रगुप्त को लेकर चाणक्य पैदल चलता हुआ एक तालाब के किनारे पहुँचा; किन्तु उसी समय उसने अपनी खोज में एक सैनिक को उधर आते देखा। अतः चन्द्रगुप्त को डुबकी लगाकर पानी में छिप जाने के लिए कहा और उसके डुबकी लगाते ही वह स्वयं धोबी बनकर कपड़े धोने लगा। इतने ही में वह सवार वहाँ आ पहुँचा और उसने धोबी से पूछा :—"अरे ! क्या तूने इधर से चन्द्रगुप्त और चाणक्य को जाते हुए देखा है ?"

"चाणक्य का तो मुझे पता नहीं; परन्तु चन्द्रगुप्त अवश्य इस तालाब में अदृश्य हो गया है।" यह सुनते ही वह सैनिक घोड़े पर से उत्तर पड़ा और उसकी लगाम धोबी को पकड़ने के लिये कहा; इस पर उसने कहा :—"अरे साहब ! मैं ऐसे घोड़े से डरता हूं, आप इसे सामने झाड़ से बाँध दें।" घोड़े को झाड़ से बाँध कर तलवार और कपड़े किनारे रख उसने ज्योंही तालाब में पैर रखा त्योंही पीछे से चाणक्य ने उसी की तलवार से उसका सिर उड़ा दिया।

इसके बाद चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को पानी से बाहर निकालकर उसे घोड़े पर चढ़ाया और खुद भी उसके साथ बैठ कर भाग निकला।

चलते-चलते वे एक ग्राम के निकट पहुँचे। उस समय चन्द्रगुप्त को कड़-कड़ाकर भूख लगी थी। अतः उसे उद्यान में ठहराकर चाणक्य गाँव में गया। मार्ग में उसे एक ब्राह्मण मिला जो मरने के लिए आतुर एवं भाग्यहीन होते हुए भी आकण्ठ भोजन कर पेट पर हाथ फेरता हुआ आ रहा था। अत्यधिक भोजन करने से उसका पेटरूपी घड़ा फूटने जैसी दशा में हो रहा था। उसे देख, चाणक्य ने पूछा :—"महाराज ! इस गाँव में कहीं पर अभ्यागत को भोजन मिल सकता है ?"

"हाँ, भाई ! अवश्य मिल सकता है ! आज इस गाँव में एक यजमान के घर महोत्सव होने से समस्त अतिथियों को इच्छानुसार मट्ठा पिलाया जाता है। अतः तुम भी जाकर भरपेट मट्ठा पी जाओ। देखो, मैं भी वहीं से मट्ठा पीकर चला आ रहा हूं।" इस प्रकार उसने पेट पर हाथ फिराते हुए चाणक्य को उधर जाने के लिए संकेत किया।

भट्टजी की बात सुनकर चाणक्य ने मन में विचार किया कि चन्द्रगुप्त उद्यान में अकेला है और इधर गाँव में जा रहा हूं। यदि वहाँ नन्द राजा का कोई सिपाही मिल गया तो बड़ी मुश्किल होगी और यदि उधर चन्द्रगुप्त पकड़ लिया गया तो सर्वनाश ही हो जायेगा। अतएव मैं इसे ही भेजकर मट्ठा मँगवा लूँ और उससे चन्द्रगुप्त की क्षुधा शान्त करदूँ, यही ठीक होगा। यह सोचकर उसने ब्राह्मण को भेजकर मट्ठा मँगवाया और उससे चन्द्रगुप्त की क्षुधा शान्त की।

वहाँ से चाणक्य चन्द्रगुप्त को लेकर आगे बढ़ा और सायंकाल को एक सन्निवेश में गड़रियों की ढानी-बस्ती के निकट जाकर वह एक वृद्धा गडरियाइन के यहाँ भिक्षा लेने पहुंचा।

क्रमशः

CREATIVE LIMITED

12, Dargah Road, Post Box 16127 Cal-700 017
Phone : (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 2400098, 2471833

SURANA MOTORS PVT. LTD.

24A, Shakespeare Sarani, 84, Parijat, 8th floor
Calcutta-700071 Phone : 2477450/5264

M/s. J. KUTHARI PVT. LTD.

12, India Exchange Place, Calcutta-1
Phone : 220-3142, Resi. 475-0995

PARK PLACE HOTEL

SINGHI VILLA, 49/2, Gariahat Road,
Calcutta-700019 Phone : 475-9991/9992/7632

M/s. METROPOLITAN BOOK COMPANY

93, Park Street, Calcutta-700016
Phone : 292418 Resi. 464-2783

M/s. D. SANDEEP & CO.

78, J. S. S. Road, Ratna Deep,
Opera House, Mumbai

BOYD SMITHS PVT. LTD.

8, Netaji Subhas Road, B-3/5, Gillander House
Calcutta-700001
Ph. : (O) 220-8105/2139 (R) 244-0629/0319

NAHAR

5/1, A. J. C. Bose Road, Calcutta-700 020
Phone : 2476874 Resi 2443810

P. C. JAIN

B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur-208005
Phone : 29-5552/5955

ARBEITS INDIA

8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta-700071 Ph : 296256/8730/1029
Resi. : 2476526/6638/2405126
Telex : 0212333 ARBI IN Fax : 0091-33290 174

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta-700001
Phone : 25-7927/6734/3816 Resi. : 400440

HARAKH CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi-110049
Phone : 6461075

RAJIV LALWANI
12, Duff Street, Calcutta
Phone : 2556705

G. M. SINGHVI
M/s. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta-700 001
Phone : 248-7476-8 (O) 475-4851/1483 (R)
Fax : 248-8184

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road, Calcutta-20
Phone : Resi. 455-3586

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta-700017
Phone : 242-5234/0329

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta-700071
Phone : 2428181

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta-1
Phone : 242-3870 Office Fax : 242-8621

ABHAY CHAND BOTHRA
Phone : Resi. 298-4729/298755

C. H. Spinning & Weaving Mills Pvt. Ltd.
Bothra Ka Chowk
Gangasahar, Bikaner

APRAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia, Howrah-711106
Phone : 6653666, 6652272

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Phone : Office 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Phone : 0151-522404, 25973
Fax : 05414-25378 (U.P.) 0151-61256 (Bikaner)

SUDEEP KUMAR SINGH DUDHORIA
Phone : Off. 252565/6315 Resi. : 4753133

A-D. ELECTRO STEEL CO. (PVT.) LTD.
Mfrs of Carbon Steel, Cast Steel, M. V. Steel &
all sort Alloy Steel Casting as per specification
Baltikuri (Surkhimill) Kalitala, Howrah
Office : 2203889/0714 Works : 6670485/2164
Resi. : 471-8393 Fax : 91-33-6672164

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd. Office : 11, Clive Row,
3rd Floor, Room No. 14, Calcutta-700001
Phone : Off. 242-4131/4756

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd floor,
Calcutta-700 007 India
Phone : 91-33-230 1329, 2321033
Fax : 91-33-230 2413

SMT. KUSUM KUMARI DUGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta-700068
Phone : 4720610

VIJAY KUMAR BHANDAWAT
20/1, Maharshi Devendra Road
5th Floor, Calcutta-7
Phone : 239-6823, 25-0623

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowringhee Road, Calcutta-700 016
Phone : 2264943, 292194 Fax : (033) 2457390

KUSUM CHANACHUR
Prop· **CHURORIA BROTHERS**
Mfg. by—K. E. C. Food Product
P. O. Azimganj, Dist. Murshidabad
Phone: STD 03483-53234
Cal—230-0432, 231-2802

ARIHANT ELECTRIC CO.
Manufacturer of Electric Cables
21, Rabindra Sarani, Calcutta-700007
Phone : 255668

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta-700 001, India
Phone (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI Fax : (033) 220975
Resi. : 464-3235/1541 Fax : (033) 4640547

NIRMALA BOTHRA
7/1/A, Nafar Kundu Road, Calcutta-700026
Phone : 475-5503

REENA MAHENDRA BHANDARI
13, Sahakar, 'B' Road, Church Gate, Bombay-20
Phone : 285-4970 Resi.
285-3762/65, 204-1792 Office

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS P LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta-700073 Tel. (033) 262210

जैन भवन प्रकाशन

हिन्दी

१. अतिमुक्त (२य संस्करण)—श्री गणेश ललवानी
अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी ४०.००

२. श्रमण संस्कृति की कविता—श्री गणेश ललवानी
अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी २०.००

३. नीलांजना—श्री गणेश ललवानी
अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी ३०.००

४. चन्दन मूर्ति—श्री गणेश ललवानी
अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी ५०.००

५. वर्द्धमान महावीर—श्री गणेश ललवानी ६०.००

६. पंचदशी—श्री गणेश ललवानी १००.००

७. यादों के आईने में—श्रीमती राजकुमारी बेगानी ३०.००

८. बरसात की एक रात—श्री गणेश ललवानी ४५.००

বাংলা

১. অতিমুক্ত —শ্রীগণেশ লালওয়ানী ৪০.০০
২. শ্রমণ সংস্কৃতির কবিতা —শ্রীগণেশ লালওয়ানী ২০.০০
৩. ভগবান মহাবীর ও জৈন ধর্ম —শ্রীপূরণচাঁদ শ্যামসুখা ১৫.০০

English

1. Bhagavati Sutra (Text with English Translation)
—Sri K. C. Lalwani
Vol. I (Satak 1-2) 150.00
Vol. II (Satak 3-6) 150.00
Vol. III (Satak 7-8) 150.00
Vol. IV (Satak 9-11) 150.00

2. The Temples of Satrunjaya
—James Burgess 100.00

3. Essence of Jainism—Sri P. C. Samsukha
tr. by Sri Ganesh Lalwani 10.00

4. Thus Sayeth our Lord—Sri Ganesh Lalwani 10.00

पी-२५, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

पर्युषण पर्वपर आपके प्रिय जनों के लिए एक शानदार उपहार !

दुनिया में पहली बार

णमोकार मंत्र बोलनेवाली अलार्म घडियाँ

शेट्रा

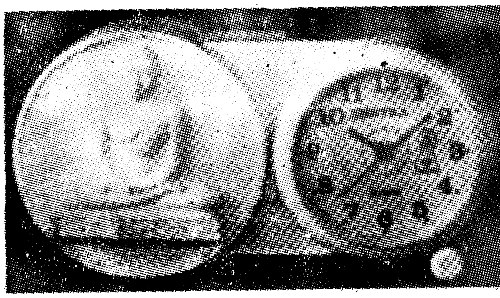

विशेषताएँ : १) आकर्षक एक्सपोर्ट मॉडेल। २) श्लोक या मंत्र की आवाज अत्यंत सुमधुर और स्पष्ट है। ३) अलार्म होते ही श्लोक या मंत्र का उच्चारण लगातार ४५ मिनट होगा। ४) यदि आप बीच में ही बंद करना चाहते है तो कर सकते है। ५) सफेद और सँडबिच यह दो आकर्षक रंगो में उपलब्द है। ६) यह घडी तीन पेन्सिल बॅटरी सेल पर चलती है। ७) उच्चतम तकनीक के कारण सतत उपयोग से भी इसकी सुमधुर ध्वनी अनेक बरसोंतक जैसे के वैसे ही रहेगी। ८) हर पूर्जे की खराबी के लिए एक वर्ष की गारंटी दी गई है। ९) इस घडी की कल्पना दुनिया में सबसे पहली बार साकार की है।

निर्माता - **शेट्रा टाईम्स (प्रा.) लिमिटेड**, दादर (पूर्व) मुंबई - ४०० ०१४

फोन ४१५६००१, ४१५६००२, ४१४५७८७ फॅक्स : ०२२ - ४१५६१५४, ४१४०९१४

वितरक : ● एशियन मार्केटिंग, मुंबई - ३ फोन : (०२२) ३४१४९४६ ● ताडदेव एम्पोरियम, मुंबई - ७, फोन : (०२२) ३०९९३६१ ● गांधी वॉच कंपनी, पुणे - २, फोन : (०२१२) ४५८८४९ ● पद्मावती सेल्स कार्पोरेशन अहमदाबाद - १, फोन : (०७९) २१११२५३ ● मोरबी क्लॉक कंपनी, सूरत - ३, फोन : (०२६१) ४२६६१५ ● ईस्टर्न टाईम एजन्सीज, कलकत्ता-१, फोन : (०३३) २२५४५१५, २२५४८९० ● वॉच ॲन्ड क्लॉक एजन्सीज, चेन्नई - १, फोन : (०४४) ५८१६२९, ५८३७१९ ● टाईम पॉईंट, दिल्ली - ३४, फोन : (०११) ७२२९५००१ ७२१९५०१ ● हितेश क्लॉक एजन्सीज, बंगलोर - ५३, फोन : (०८०) २२५७१६६ ● बॉम्बे वॉच कंपनी, इंदौर-७, फोन : (०७३१) ४३००३५, ५६४२६३ ● शंकर वॉच ॲन्ड रेडिओ हाऊस, भोपाल-१, फोन : (०७५५) ५४२७८३ ● नागपूरवाला वॉच कं. वर्धा - १, फोन : (०७१५२) ४०१०७

(महावीर या गोमटेशजी के अलावा श्लोक और मंत्र बोलनेवाली अलार्म घडियाँ गणेश, राम-सीता, श्रीकृष्ण, शिव, साई, गुरुनानक, मंगलमूर्ति गणेश, आयप्पा, मुरगा, गुरुवायुराप्पा, कालीमाता, दुर्गामाता, बालाजी, राघवेंद्र, स्वामी नारायण, अजान और चर्च प्रेअर (जीझस् क्राइस्ट्) की भी उपलब्ध हैं।)

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है।
ज्ञान के बिना चारित्र के गुण नहीं होते, गुणों के बिना मुक्ति नहीं होती
और मुक्ति बिना निर्वाण शाश्वत आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD.

Steams Agents, Handling Agents, Commission Agents
& Transport Contractors

Regd. Office:
2, CLIVE GHAT, STREET,
(N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6
CALCUTTA-700 001
Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333
Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office : 28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam-530020
Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326
Gram : BOTHRA

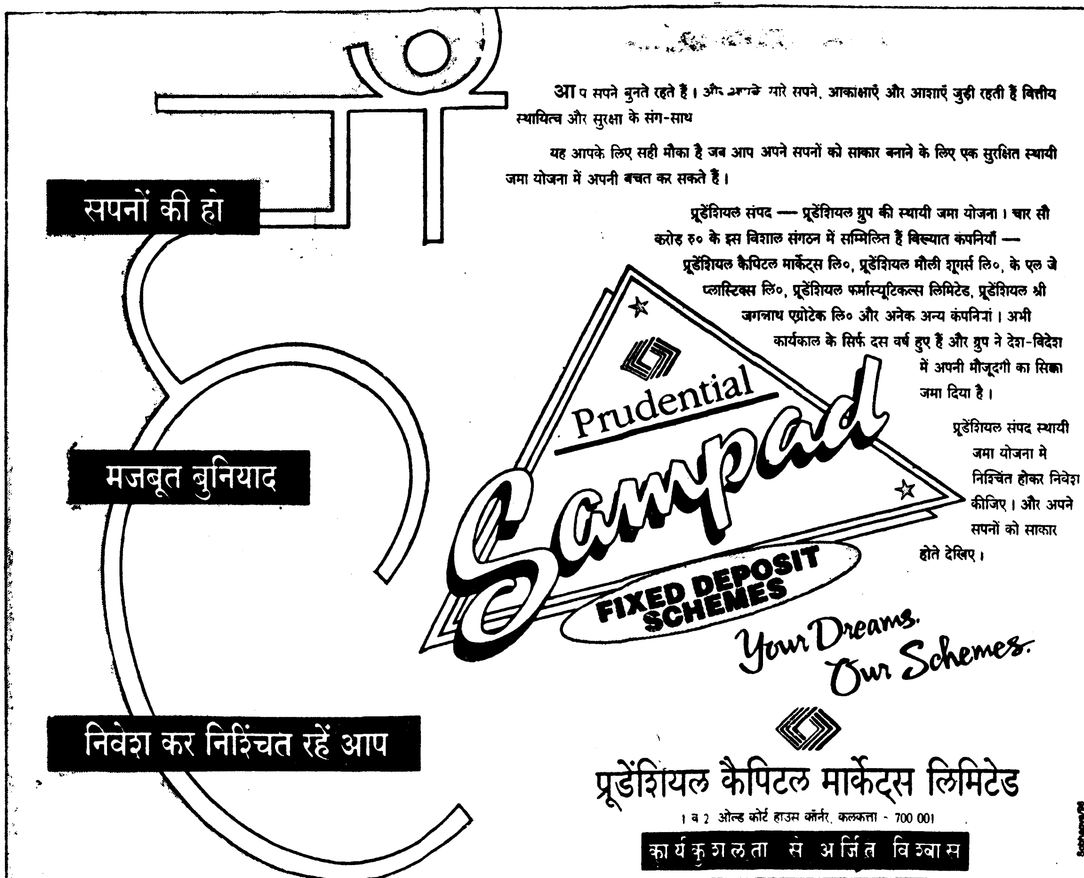
सपनों की हो
मजबूत बुनियाद
निवेश कर निश्चिंत रहें आप
आप सपने बुनते रहते हैं। और आपके सारे सपने, आकांक्षाएँ और आशाएँ जुड़ी रहती हैं वित्तीय स्थायित्व और सुरक्षा के संग-साथ
यह आपके लिए सही मौका है जब आप अपने सपनों को साकार बनाने के लिए एक सुरक्षित स्थायी जमा योजना में अपनी बचत कर सकते हैं।
प्रूडेंशियल संपद — प्रूडेंशियल ग्रुप की स्थायी जमा योजना। चार सौ करोड़ रु० के इस विशाल संगठन में सम्मिलित हैं विख्यात कंपनियाँ — प्रूडेंशियल कैपिटल मार्केट्स लि०, प्रूडेंशियल मौली शूगर्स लि०, के एल जे प्लास्टिक्स लि०, प्रूडेंशियल फर्मास्यूटिकल्स लिमिटेड, प्रूडेंशियल श्री जगन्नाथ एग्रोटेक लि० और अनेक अन्य कंपनियां। अभी कार्यकाल के सिर्फ दस वर्ष हुए हैं और ग्रुप ने देश-विदेश में अपनी मौजूदगी का सिक्का जमा दिया है।
प्रूडेंशियल संपद स्थायी जमा योजना में निश्चिंत होकर निवेश कीजिए। और अपने सपनों को साकार होते देखिए।
Prudential
Sampad
FIXED DEPOSIT SCHEMES
Your Dreams. Our Schemes.
प्रूडेंशियल कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड
1 व 2 ओल्ड कोर्ट हाउस कॉर्नर, कलकत्ता - 700 001
कार्यकुशलता से अर्जित विश्वास